

कृषि संसार

WEEKLY KRISHI SANSAR

All Subject to Patiala Jurisdiction.

RNI Regd. No. T/PB/2024/0508/3389/1059 • Chief Editor : Jagpreet Singh • Issue Dt. 08-02-2025 • Vol.1 No.2 • H.O. : # 9-A, Ajit Nagar, Patiala-147001 (Pb.) • Mob. 98151-04575 • Page 8

E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

फसलों की अच्छी पैदावार के लिए 16 पोषक तत्व जरूरी

रबी की फसलों में सल्फर के लिए जिप्सम बेहतर स्रोत

रबी फसलों से अधिक उपज प्राप्त करने के लिए 16 पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। ये पोषक तत्व फसल को हवा,



पानी और मिट्टी के जरिये उपलब्ध होते हैं। मुख्य कृषि अधिकारी डॉ. अमरीक सिंह ने बताया कि 16 पोषक तत्वों में से किसी भी फसल को चार पोषक तत्व हाइड्रोजन, कार्बन, नाइट्रोजन व ऑक्सीजन हवा, पानी व मिट्टी से मिलते हैं, जबकि फास्फोरस, पोटाश, ज़िंक, मैग्नीज़, मैरीशियम, कॉपर, बोरोन, कैल्शियम, सल्फर आदि पोषक तत्व फसल को पोषक तत्व के रूप में मिलते हैं। क्लोरोइड, लोहा, मोलिब्देनम पोषक तत्व

मिट्टी, रसायन और देशी उर्वरकों से उपलब्ध होते हैं।

उन्होंने बताया कि सल्फर एक महत्वपूर्ण पोषक तत्व है, जो फसल के लिए बहुत जरूरी है। यदि गेहूं या अन्य फसलों में इस तत्व की कमी हो जाती है, तो उत्पादन पर बहुत बुरा असर पड़ता है। गेहूं की फसल में सल्फर की कमी के कारण नई पत्तियों का शीर्ष भाग हरा रहता है, जबकि शेष भाग पीला पड़ जाता है। जिप्सम सल्फर पोषक तत्व की पूर्ति के लिए बहुत सस्ता और उत्तम स्रोत है, जिसे 100 किलोग्राम प्रति एकड़ डाला जा सकता है। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग जिप्सम 50 प्रतिशत अनुदान पर उपलब्ध करवा रहा है। 50 किलोग्राम का बैग 205 रुपए में मिलता है। जिप्सम का उपयोग कैल्शियम युक्त मिट्टी को बेहतर बनाने के लिए भी किया जा सकता है।

कृषि यूनिवर्सिटी की नवीनतम सिफारिशों किसानों तक पहुंचाने के निर्देश

खेती धंधे को लाभप्रद बनाने के लिए और किसानों को सहायक धंधे अपनाने के लिए प्रेरित करने के साथ-साथ पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना की प्रमाणित तकनीकों से अवगत

विज्ञान केन्द्र, फतेहगढ़ साहिब के सहयोगी निर्देशक (प्रशिक्षण) विपन रामपाल, फार्म सलाहकार सेवा केन्द्र, पटियाला और संग्रहर से डॉ. गुरप्रीत कौर और डॉ. अशोक कुमार भी इस मीटिंग में विशेष

पार्क, प्रदर्शनी प्लाटों और बीज फार्म का दौरा करवाया गया। डॉ. जसविन्दर सिंह ने हाजरीन किसानों और अधिकारियों को कृषि विज्ञान केन्द्र पटियाला की तरफ से आयोजित किए जाते पसार कामों



करवाने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, पटियाला में वैज्ञानिक सलाहकार, कमेटी की मीटिंग हुई।

इसकी अध्यक्षता डॉ. मक्खण सिंह भुल्लर, निर्देशक पसार शिक्षा, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना ने की। डॉ. जसविन्दर सिंह, प्रिंसीपल एप्लियोनाइज्मिस्ट ने विशेष मेहमान के तौर पर शिरकत की। कृषि विज्ञान केन्द्र, संग्रहर के सहयोगी निर्देशक (प्रशिक्षण) डॉ. मनदीप सिंह, कृषि

तौर पर उपस्थित थे।

कृषि, बागवानी, पशु-पालन, मछली-पालन, वन, पंजाब प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड, महिला एवं बाल विकास विभाग, रोज़ग़ार विभाग के अफसर साहिबान, प्रगतिशील किसानों और किसानों ने इस मीटिंग में विचार सांझे किए। डॉ. हरदीप सिंह भिक्षी, डिप्टी डायरेक्टर (प्रशिक्षण), कृषि विज्ञान केन्द्र, पटियाला के नेतृत्व में आए हुए मेहमानों को केन्द्र के तकनीकी

के साथ अधिक से अधिक जुड़ने के लिए उत्साहित किया। प्रगतिशील किसान कुलविन्दर सिंह, सुखदेव सिंह, गुरप्रीत सिंह, नरिन्दर सिंह, परमिन्दर सिंह, रणधीर सिंह, अजैब सिंह, गुरप्रीत सिंह और बीबीयां हरजीत कौर, गुरप्रीत कौर और भूषिन्द्र कौर ने मधु-मक्खी पालन, फसल उत्पादन सांज़ीयों की काश्त, खुम्ब उत्पादन, फूड प्रोसेसिंग और फुलकारी दस्तकारी बारे अपने तजुरबे सांझे किए।

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा मार्च 2025 में लगाए जा रहे

किसान मेले

पी.ए.यू. कैप्स, लुधियाना में
दो दिवसीय किसान मेला 21 व 22 मार्च

कृषि संसार द्वारा इन मेलों पर स्टाल लगाए जाएंगे
और नई मैंबरशिप हेतु बुकिंग की जाएगी।

नाग कलां जहांगीर
(अमृतसर)
5 मार्च

बल्लोवाल सौखड़ी
(शहीद भगत सिंह नगर)
7 मार्च

फरीदकोट
11 मार्च

गुरदासपुर
13 मार्च

बठिण्डा
18 मार्च

रौणी (पटियाला)
25 मार्च

तीन दिवसीय पूसा कृषि विज्ञान किसान मेला, दिल्ली में 24 से 26 फरवरी तक

मूँगफली का वैज्ञानिक नाम एरेकिस हाईपोजिया है। यह एक दलहनी कुल की फसल है। यह सभी प्रकार की दालों में सर्वाधिक सूखा सहन करने वाली फसल है। इसको तिलहन फसल समूह का राजा भी कहा जाता है। इसमें 46–55 प्रतिशत तक तेल तथा 28–30 प्रतिशत तक प्रोटीन की उपलब्धता के कारण अन्य तिलहनी फसलों की तुलना में यह अधिक ऊर्जा प्रदान करती है। मूँगफली की पाचनशीलता लगभग 86.08 प्रतिशत तक होती है। इसमें विटामिन्स एवं खनिज पदार्थ जैसे आवश्यक पोषक तत्व भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इन्हीं पोषक मानों के कारण मूँगफली को गरीबों का बादाम भी कहा जाता है। सर्द मौसम की यह मुख्य तिलहनी फसल है। मूँगफली की खेती सफलतापूर्वक उन सभी क्षेत्रों में की जा सकती हैं, जहां खरीफ मौसम में मूँगफली उगाई जाती हो तथा गर्मियों के मौसम में सिंचाई के उत्तम साधन उपलब्ध हो सकें।



मूँगफली एक अच्छे फसलचक्र वाली एवं भूमि को आच्छादित करने वाली फसल है। इसकी पैदावार मुख्यतः उष्ण कटिंग या अर्धशुष्क क्षेत्रों में सरलता से की जा सकती है। इसको फसल-चक्र में लाने से वहां पर मृदाक्षण एवं भूमि कटाव को एक निश्चित सीमा तक रोका जाना संभव है। यह फसल मृदा संरक्षण एवं जल संरक्षण को प्रोत्साहित करती है। इसकी जड़ों में नाईट्रोजन स्थिरीकरण करने वाले जीवाणु (नाईट्रोजन जाति) भी पाए जाते हैं। यह वायुमंडलीय नाईट्रोजन को भूमि में लगभग 200 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से स्थिर करती

जायद में मूँगफली उत्पादन

सर्वेश कुमार और आर.सी.शर्मा, वैज्ञानिक, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र, जिला हरदा-461331 (मध्य प्रदेश)

में बुवाई के लिए अच्छी है। यह 110-120 दिनों में तैयार हो जाती है। उपज 16-18 किंवंटल प्रति हैक्टेयर देती है। इसमें 49 प्रतिशत तेल पाया जाता है। इसमें तेल की मात्रा 50-55 प्रतिशत तक होती है। यह लगभग 130-135 दिनों में पककर तैयार हो जाती है।

किस्म जायद के लिए उपयुक्त है। इसकी औसत उपज 30-35 किंवंटल प्रति हैक्टेयर तक होती है। यह किस्म 120-125 दिनों में पककर तैयार होती है। इसके दानों में तेल की मात्रा लगभग 48 प्रतिशत होती है। फलियां में दानों का अनुपात 64-65 प्रतिशत तक होता है।

खेत की तैयारी

जलवायु :- इसकी खेती के लिए लगभग 70-90° फारेनहाईट तापमान एवं ठंडी रात फसल परिपक्वता के समय तथा वार्षिक वर्षा 50-125 सै.मी. होनी चाहिए।

मृदा एवं जुताई :- मूँगफली की फलियां भूमि के अंदर विकसित होती हैं। इसकी फसल के लिए अच्छे जल निकास वाली, भुरभुरी दोमट एवं रेतीली दोमट, कैल्शियम और मध्यम जैव पदार्थों से युक्त मृदा उत्तम रहती है। इस फसल के लिए मृदा का पी-एच मान 5-8.5 तक उपयुक्त रहता है। सामान्यतः 12 से 15 सै.मी. तक गहरी जुताई अच्छी रहती है। गहरी जुताई करने से इसकी अच्छी रहती है। गहरी जुताई करने से इसकी जड़ें जमीन में काफी गहरी चली जाती हैं। इसमें तेल की मात्रा 40 से 50 प्रतिशत तथा फलियां में दाने का अनुपात 65 प्रतिशत होता है।

टी.ए.जी.-24 :- यह किस्म मूँगफली की गुच्छेदार किस्म है। जायद की बुवाई के लिए नई सर्वोत्तम किस्म है। इसकी पैदावार 30-35 किंवंटल प्रति हैक्टेयर तक होती है। साथ ही कम समय में पककर तैयार हो जाती है। इसमें तेल की मात्रा 40 से 50 प्रतिशत तथा फलियां में दाने का अनुपात 65 प्रतिशत होता है।

जे.जी.एन.-3 :- यह किस्म मध्य प्रदेश में जायद में बुवाई के लिए एवं सूखारोधी है। लगभग सभी प्रकार की मृदाओं से अच्छा उत्पादन देने वाली है। यह किस्म कुल 90-100 दिनों में पककर तैयार होती है। इसमें 50 प्रतिशत तेल पाया जाता है। इसका उत्पादन 15-17 किंवंटल फलियां प्रति हैक्टेयर है।

टी.ए.जी.-24 :- यह किस्म मूँगफली की गुच्छेदार किस्म है। जायद की बुवाई के लिए नई सर्वोत्तम किस्म है। इसकी पैदावार 30-35 किंवंटल प्रति हैक्टेयर तक होती है। साथ ही कम समय में पककर तैयार हो जाती है। इसमें तेल की मात्रा 40 से 50 प्रतिशत तथा फलियां में दाने का अनुपात 65 प्रतिशत होता है।

संकर किस्मों का प्रयोग करते

एस.बी.-11 :- यह किस्म



हल से फिर देसी हल या हैरो से 2-3 जुताई करके खेत को बुवाई के लिए समतल कर लेना चाहिए।

भूमि उपचार :- मूँगफली की फसल में मुख्यतः सफद लट, दीमक, शीर्ष गलन रोग एवं पत्ती धब्बा रोग इत्यादि का प्रकोप अधिक होता है। इसलिए अंतिम जुताई के समय फोरेट-10 जी या काबॉफ्यूरॉन, हेप्टाक्लोर आदि से 25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से मृदा को उपचारित कर लेना चाहिए। दीमक का प्रकोप कम करने के लिए खेत की पूरी सफाई जैसे सूखे डंठल एवं कच्ची खाद आदि को खेत से

कीटनाशी (एक लीटर क्लोरोपायरिफॉस 20 ई.सी. से प्रति 40 कि.ग्रा. बीज की दर) से तथा अंत में राईजोबियम कल्चर एवं फॉस्फेट विलेय जीवाणु कल्चर से उपचारित करना चाहिए।

उर्वरक :- मूँगफली एक दलहनी फसल है। इसलिए नाईट्रोजन की कम मात्रा की जरूरत होती है। 20-30 कि.ग्रा. नाईट्रोजन, 50-60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं 30-40 कि.ग्रा. पोटाश का प्रति हैक्टेयर की दर से उपयोग करना चाहिए। फॉस्फोरस, पोटाश एवं आधी मात्रा नाईट्रोजन की भूमि में अंतिम जुताई

के साथ लाईनों में बुवाई कर देनी चाहिए।

नाईट्रोजन :- नाईट्रोजन से पौधों की वानस्पतिक वृद्धि तेजी से होती है एवं यह पर्णहरित क्लोरोफिल व प्रोटीन निर्माण में मुख्य योगदान करता है। मूँगफली में 20 कि.ग्रा. नाईट्रोजन प्रति हैक्टेयर देते हैं। नाईट्रोजन के मुख्य स्रोत किसान खाद, अमोनियम सल्फेट, यूरिया इत्यादि हैं। नाईट्रोजन की पूर्ति के लिए मूँगफली में अमोनियम सल्फेट अधिक उपयुक्त होता है।

फॉस्फोरस :- दलहनी कुल की फसलों के लिए फॉस्फोरस एवं आवश्यक तत्व होता है। इससे जड़ों में पाई जाने वाली ग्रन्थियों का विकास होता है। यह फल एवं बीज के निर्माण में भी सहायक होता है। सिंगल सुपर फॉस्फेट मूँगफली की फसल के लिए अच्छा पौष्ण स्रोत है। मूँगफली में 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस पैन्टा ऑक्साइड प्रति हैक्टेयर देते हैं।

पोटाश :- पोटाश राईजोबियम जीवाणु को भोजन प्राप्त करवाने में सहायक होता है। यह नाईट्रोजन की अधिकता के प्रतिकूल प्रभाव को भी रोकता है। पोटाश से बीजों का बजन बढ़ता है। बीज चमकीले एवं सुडौल बनते हैं। सल्फेट ऑफ पोटाश इसका अच्छा स्रोत है।

कैल्शियम :- मूँगफली की फसल में कैल्शियम का उत्पादन पर काफी प्रभाव पड़ता है। कैल्शियम से फली में दानों का पूर्ण विकास होता है। जिसमें इसका महत्वपूर्ण स्रोत है, इससे मृदा की पी-एच भी संतुलित होता है।

सल्फर :- सल्फर, तिलहनी फसलों के लिए एक प्रमुख तत्व है। इसका सीधा प्रभाव तेल की मात्रा पर पड़ता है। यह मृदा में उपस्थित जीवाणुओं की क्रियाशीलता बढ़ाता है। यह कवकनाशी के रूप में भी कार्य करता है। इससे फफूंदी से संबंधित रोगों का नियंत्रण होता है। इनकी पूर्ति के लिए जिसमें सिंगल सुपर फॉस्फेट एवं अमोनियम सल्फेट इत्यादि का प्रयोग कर सकते हैं। कैल्शियम एवं सल्फर को भूमि में 5 सै.मी. गंहराई तक मिलाते हैं। इससे विकसित हो रही कलिल्यों और सुझायां द्वारा इसको ग्रहण कर लिया जाता है। जिसमें इसका महत्वपूर्ण स्रोत है, इससे मृदा की पी-एच भी संतुलित होता है।

सिंचाई :- खरीफ की फसल पूर्णतः मौनसून पर ही आधारित होती है। यदि मूँगफली सिंचाईयों की विशिष्ट आवश्यकताओं में सिंचाई कर दी जाए तो प्रति हैक्टेयर उपज बढ़ जाती है। सामान्यतः जायद में शेष पृष्ठ 6 पर

सारणी-1 : मूँगफली में सिंचाई आवश्यकताएं

सिंचाई संख्या	अवधि	अवस्थाएं
प्रथम	बुवाई के 25-30 दिनों बाद	बढ़वार अवस्था पर
द्वितीय	बुवाई के 35-40 दिनों बाद	फूल निकलते समय
तृतीय	बुवाई के 45-50 दिनों बाद	सुइयां बनते समय
चौथी	बुवाई के 55-60 दिनों बाद	फलियां बनते समय
पांचवी	बुवाई के 65-70 दिनों बाद	फलियां का विकास होते समय
छठी	बुवाई के 80-85 दिनों बाद	दाना पकते समय

समय संतुलित उर्वरकों का उपयोग, उचित जल निकास एवं जल प्रबंध पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। अतः जायद में मूँगफली का आधुनिक तकनीकी से उत्पादन करने के लिए इसकी उन्नत किस्में इस प्रकार है:

टी.जी. 26 :- यह किस्म मध्य प्रदेश में रबी एवं जायद दोनों

डी.ए.-86 :- यह झुमका

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने बजटीय भाषण में किसानों और कृषि सेक्टर के लिए कई नई स्कीमों का ऐलान किया है। कृषि क्षेत्र के लिए बजट में 1.71 लाख करोड़ रुपए आवंटित किए गए हैं। किसान क्रैडिट कार्ड से लोन की सीमा 3 लाख रुपए से बढ़ कर 5 लाख रुपए कर दी।

इसके अलावा निर्मला सीतारमण ने किसानों के लिए 'पी.एम. धन धान्य कृषि योजना' का

रवि शंकर

ऐलान किया, जिसका मकसद कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए नीति तैयार करना है। इस स्कीम के तहत देश के उन 100 ज़िलों पर फोकस किया जाएगा, जहां कृषि उत्पादन कम है। माना जा रहा है कि इससे देश के 1.74 करोड़ किसानों को सीधे तौर पर फायदा होगा। इस योजना के साथ ही मखाना किसानों के लिए एक विशेष बोर्ड बनाने, उन्नत बीज मिशन और कपास उत्पाद के लिए 5 साल की योजा लागू करने की घोषणा की गई है।

वहीं भारत को दालों में आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार ने 6 साल के विशेष मिशन की घोषणा की है। तुअर, उड़द और मसूर दालों का उत्पादन बढ़ाने के लिए केन्द्र सरकार की एजेंसियां अगले 4 वर्षों तक इनको खरीद करेंगी। इससे दाल उत्पादक किसानों को प्रोत्साहन मिलेगा और घरेलू बाजार में कीमतों को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी। यूं तो बजट में कृषि में उत्पादकता और लचीलापन पाने पर पूरा फोकस किया गया है, लेकिन कृषि क्षेत्र के लिए वित्त मंत्री ने वैसा कोई ठोस ऐलान नहीं किया, जिससे किसानों को सीधा फायदा उनकी जेब में आता दिखे।

वित्त मंत्री ने कहा कि यह बजट ग्रामीण, युवाओं और छोटे किसानों पर फोकस करते हुए पेश किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि

बजटीय घोषणाओं से कितनी बदलेगी खेती-किसानी की तकदीर



सरकार का फोकस ग्रामीण युवा, छोटे किसानों पर है। हमारा लक्ष्य राज्यों के साथ मिल कर कृषि का विकास करना है। लेकिन गौर करने वाली बात यह है कि वित्त मंत्री ने बजट में एम.एस.पी. की गारंटी देने के संबंध में कुछ नहीं कहा, जबकि किसान संगठन लंबे समय से एम.एस.पी. को कानूनी दर्जा देने की मांग कर रहे हैं। चंद राज्यों को छोड़ दें, तो एम.एस.पी. पर खरीद का ठोस तंत्र तक नहीं है। साथ ही किसान सम्मान निधि की राशि में भी वित्त मंत्री ने कोई बढ़ोत्तरी नहीं की, जबकि खेती की बढ़ती लागत को देखते हुए किसान और किसान नेता पी.एम. किसान निधि में बढ़ोत्तरी की उम्मीद कर रहे थे। किसान सम्मान निधि के तौर पर किसानों को साल भर में 3 किस्तों में 6 हजार रुपए दिए जाते हैं।

अहम् बात यह है कि कृषि प्रधान देश भारत में आजादी के 77 साल बाद भी किसानों की समस्याएं दूर नहीं की जा सकी हैं। किसान अपने आप को आर्थिक रूप से सबसे कमज़ोर मान रहा है, वह कर्ज़ के जंजाल से बाहर

नहीं निकल पा रहा। किसानों की इमानदार कोशिशें होती कभी नज़र नहीं आईं। किसानों को संतुष्ट करने के लिए देश के नीति-निर्धारक समय-समय पर जो उपाय करते हैं, वे तात्कालिक राहत पहुंचाने वाले होते हैं। इन उपायों के तहत

भारतीय कृषि व्यवस्था में अपनी पूरी जिंदगी खपाने वाले किसान आज खेती को घाटे का सौदा बताते हैं। आखिर क्या कारण है कि तमाम प्रयासों के बावजूद कृषि क्षेत्र की समस्याओं का समाधान नहीं कर पाई?

आज भारत विश्व की शीर्ष 5 सबसे मज़बूत अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाता है, लेकिन आजादी के बाद योजनाबद्ध तरीके से कृषि में निवेश के बाद भी भारतीय किसान दूसरे देशों के मुकाबले काफी पिछड़ा हुआ है। देश की प्रति हैक्टेयर उत्पादकता वैशिक औसत से कम है। दूसरी तरफ देशभर में किसानों के असंतोष का सबसे बड़ा कारण उनकी उपज का सही मूल्य न मिलना रहा है और यही उनकी सबसे बड़ी समस्या है।

किसानों की समस्याएं नई नहीं हैं, लेकिन उनके समाधान की



किसानों को लुभाने वाले कदम उठाए जाते हैं, जबकि ज़रूरत ऐसे संरचनात्मक उपायों की है, जो दीर्घकालिक हैं और किसानों की समस्या को स्थायी तौर पर हल कर सकें।

अभी तक की जो भी सरकारें सत्ता में रही हैं, वे कृषि को सिर्फ देश की आवाम का पेट भरने का ही संसाधन मानती आई हैं। कृषि

नहीं मिल पाता। कई बार किसानों के पास इतनी भी पूँजी नहीं होती कि वे बीज, खाद, सिंचाई जैसी बुनियादी चीज़ों का भी प्रबंध कर सकें। इसका परिणाम यह होता है कि किसान समय से फसलों का उत्पादन नहीं कर पाते। ऐसे में सवाल फिर यही खड़ा होता है कि किसानों के लिए यह बजट लाभदायक कैसे हो सकता है।

'अमृत उद्यान' में 140 से अधिक प्रकार के फूल और पुष्प घड़ी बनेगी आकर्षण का केन्द्र



बाग के मीडिया पूर्वावलोकन के दौरान राष्ट्रपति भवन द्वारा साझा किए गए नोट के अनुसार यहां लगभग 220 मीटर का

दिल्ली का प्रसिद्ध अमृत उद्यान आम लोगों के लिए खुल गया है। यहां अनेक प्रकार के गुलाब, पुष्प घड़ी और बाल वाटिका उनके लिए आकर्षण के केन्द्र होंगे।

राष्ट्रपति भवन ने बताया कि इस साल आगंतुकों को 'प्लुमेरिया' के पेड़ की एक रंग-बिरंगी श्रृंखला देखने को मिलेगी। प्लुमेरिया गार्डन के बगल में एक बरगद का बाग होगा। यह राजसी बरगद के पेड़ों का घर है, जो अपनी फैली हुई शाखाओं और जड़ों के लिए जाने जाते हैं। ऐसे में एक मनमोहक वातावरण बनता है।

से शाम 6 बजे तक इस उद्यान में जा सकते हैं। उन्होंने बताया कि प्रवेश और बुकिंग मुफ्त होंगी।



एक संवेदी पथ होगा, जिस पर नंगे पैर चलने से इंद्रियां झंकूत होंगी।

राष्ट्रपति द्वारा मुर्म की उपप्रैस सचिव नविका गुप्ता ने बताया कि लोग सोमवार को छोड़ कर सप्ताह में छह दिन पूर्वाहि 10

पंद्रह एकड़ ज़मीन में फैला यह उद्यान 5 फरवरी (दिल्ली विधान सभा चुनाव), 20-21 फरवरी (राष्ट्रपति भवन में विजिटर्स कानून्फ्रैंस) और 14 मार्च (होली) को बंद रहेगा।

आगंतुक बाल वाटिका, 'प्लुमेरिया गार्डन', 'बोनसाई गार्डन', 'सैट्रल लॉन', 'लॉन गार्डन' और 'सर्कुलर गार्डन' से जुर्जेंगे, जहां प्रदर्शित फूलों आदि विभिन्न चीज़ों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए समर्पित क्यू.आर. कोड लगे होंगे।

बताया जा रहा है कि इस वर्ष आगंतुक द्यूलिप के सुंदर फूलों साथ-साथ 140 विभिन्न प्रकार के गुलाब और 80 से अधिक अन्य फूल भी देख सकेंगे।

अमृत उद्यान में पिलखन वृक्ष के पास एक पुष्प घड़ी भी लगाई गई है, जो एक अनंती पुष्प डिजाइन का प्रतिनिधित्व करती है। उसमें फूल गोल आकार में लगाए गए हैं और इसकी परिधि छोटे किनारे वाले पौधों और रंगीन कंकड़ों से घिरी हुई है। अधिकारियों के अनुसार यह घड़ी समय भी प्रदर्शित करेगी। अमृत उद्यान 2 फरवरी से 30 मार्च तक आम लोगों के लिए खुला रहेगा।

कृषि संसार

KRISHI SANSAR

मुख्य कार्यालय :
9—ए, अजीत नगर,
पटियाला—147001
(पंजाब)
मो. 98151—04575

कार्पोरेट कार्यालय :
के.डी. कॉम्प्लैक्स, गजशाला रोड,
नजदीक शेरे पंजाब मार्केट,
पटियाला—147001
(पंजाब)
मो. 90410—14575

वर्ष : 01 अंक : 02
तिथि : 08-02-2025

सम्पादक
जगप्रीत सिंह

सम्पादकीय बोर्ड
डॉ. डी.डी. नारंग
डॉ. जे.एस. डाल
डॉ. आर.एम. फुलझोले

हर घर के रसोई घर में सब्ज़ियों व फलों का प्रयोग किया जाता है। अतः रसोई घर में काफी मात्रा में सब्ज़ियों व फलों के छिलकों के रूप में अवशेष पदार्थ मिलने की संभावना रहती है। इस प्रकार प्रत्येक घर से कार्बनिक किस्म का जो भी अवशेष पदार्थ बाहर निकलता है, उससे हम वर्मी कम्पोस्ट तैयार कर सकते हैं। तैयार वर्मी कम्पोस्ट को हम गृहवाटिका में प्रयोग कर सकते हैं तथा गुणवत्ता युक्त सब्ज़ियों द्वारा अपने स्वास्थ्य को बनाए रख सकते हैं।

गृहवाटिका के एक कोने में पक्के बैड बनाएं, जिसकी ऊंचाई 1.5 फूट होनी चाहिए। बैड में सबसे नीचे साबुत पराली या 1-2 इंच भूसे की परत बिछाएं या घर में प्रयोग होने वाले कूलर के पुराने पैड बिछाएं। इसके ऊपर मिट्टी की 1-2 इंच परत बिछाएं। पानी छिड़क कर इसे गीला करे तथा इसके ऊपर लगभग 3-4 इंच मोटी गोबर की परत बिछाएं। गोबर 2-3 सप्ताह पुराना होना चाहिए। इसमें लगभग 50 केंचुए छोड़ दें। इसके ऊपर रसोई घर से प्राप्त होने वाले कूड़े-कचरे को डालते रहें तथा ऊपर से बोनी से ढक



गृह वाटिका में वर्मी कम्पोस्ट के लाभ

सुरेन्द्र कुमार शर्मा, राकेश कुमार एवं ममता फोगाट,
सस्य विज्ञान विभाग, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिंसार

करना चाहिए। यदि घर में गमलों में सजावटी पौधे हों तो उनमें भी वर्मी कम्पोस्ट का प्रयोग किया जा सकता है। प्रत्येक गमले में मुद्दीभर यानि 50-100 ग्राम वर्मी कम्पोस्ट साल में दो बार (फरवरी-मार्च व जुलाई-अगस्त) में डाल कर सजावटी पौधों की बढ़वार अच्छी होती है। दूसरी तरफ यदि हम प्रत्येक गमले में

* इसके प्रयोग से भूमि में वायु संचार अच्छा होता है, जिससे पौधों की जड़ों का विकास भी अच्छा होता है।

* इसके उपयोग से रासायनिक उर्वरकों व कृषि रसायनों के प्रयोग में कमी की जा सकती है।

* कृषि उत्पादन की लागत को कम करता है तथा भूमि की उर्वरा शक्ति को सुधारता है।

* आस-पास की गंगी में कमी होती है एवं पर्यावरण की सुरक्षा होती है।

* इसके प्रयोग से बने पदार्थों को खाने से मानव व पशुओं का स्वास्थ्य ठीक रहता है। पदार्थ किसी भी प्रकार के हानिकारक अवशेषों से मुक्त रहते हैं।

* पशुओं के लिए खाने वाले पदार्थों की गुणवत्ता बढ़ जाती है।

* जिस क्षेत्र में वर्मी कम्पोस्ट का प्रयोग किया जाता है, उस क्षेत्र के नीचे का पानी हानिकारक रसायनों से मुक्त हो जाता है।

* यह एक अच्छा व्यवसाय है।

* इसके प्रयोग से फलों, सब्ज़ियों एवं खाद्यान्नों के स्वाद, आकार, रंग व पैदावार में वृद्धि होती है।

* मृदा का पी.ए.च. मान भी संतुलित रहता है।

* पौधों को पानी की कम आवश्यकता पड़ती है।

* इस खाद में रोग फैलाने वाले जीवाणुओं की संख्या न्यूनतम होती है, जिससे फसलों में बीमारियां फैलने की संभावना कम ही रहती है।

* कच्चे कार्बनिक पदार्थों से ग्रसित होने के कारण दीमक का प्रकोप कम होता है।

* केंचुआ खाद अन्य सभी जैविक खादों की तुलना में सस्ता व अधिक कारगर है।

* केंचुआ खाद जमीन की गहरी परतों में से पौष्टक तत्वों व खनिज लवणों को जमीन की ऊपरी परत तक लाने में भी मदद करता है।

* वर्मी कम्पोस्ट में मनुष्य व पौधों को नुकसान वाले किसी भी प्रकार के जीवाणु नहीं होते।

* केंचुआ खाद में खरपतवारों के बीज नहीं होते, अर्थात् खेत में इसका प्रयोग करने पर किसी भी प्रकार के खरपतवार की समस्या नहीं आती। इसके विपरीत गोबर की खाद व अन्य कम्पोस्टों के उपयोग से खेत में खरपतवार अधिक उगते हैं।

* फसल अवशेषों को इसमें उपयोग करने की वजह से इनको जलाने से होने वाला प्रदूषण भी कम हो जाता है। इस प्रकार यह पर्यावरण संरक्षण में भी अपना योगदान देता है।

* वर्मी कम्पोस्ट के साथ खेत में अण्डों से केंचुए पैदा होते हैं, जो फसल के लिए लाभदायक सिद्ध होते हैं।

* वर्मी कम्पोस्ट के प्रयोग से तैयार हुए गुणवत्ता युक्त कृषि उत्पादों का भाव अधिक होने के कारण आय में बढ़ोत्तरी की संभावना बनी रहती है। इस प्रकार एक स्थाई वर्मी कम्पोस्ट इकाई बना कर अच्छा लाभ अर्जित किया जा सकता है।

* वर्मी कम्पोस्ट में आक्जिन्स, जिब्रेलिन्स, साइटोकाइनिन्स, विटामिन्स, अमीनो अम्ल आदि कई तरह के जैव-सक्रिय पदार्थ प्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं, जिनसे पौधों में अधिक पैदावार देने की क्षमता का विकास होता है।

* अधिक जैविक खादों के प्रयोग से रासायनिक खादों की मांग कम होगी, जिससे हमारे देश की आर्थिक स्थिति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। □



दें। जब बैड पूरी तरह भर जाए, तो दूसरे बैड में भी इसी तरह सामग्री डालते हैं। समय-समय पर पानी छिड़क कर बैड में नमी बनाए रखें। जब तक दूसरे बैड में सामग्री पूरी तरह भरेगी, तब तक पहले बैड में खाद बन कर तैयार होने लगेगी। जब खाद तैयार हो जाए, तो पानी डालना बंद कर दें। केंचुए बैड के नीचे वाली परत में चले जाएंगे। इस प्रकार वर्मी कम्पोस्ट को बाहर निकाल कर गृहवाटिका में प्रयोग कर सकते हैं। खाद को छान कर प्रयोग करने से अपने बाहर निकाल कर तैयार बैड में डाल कर केंचुओं की संख्या को बढ़ाया जा सकता है। अतः हम कह सकते हैं कि गृहवाटिका में वर्मी कम्पोस्ट का प्रयोग करके हम अपने लिए कार्बनिक सब्ज़ियों पैदा कर सकते हैं। गृहवाटिका में लगभग 1 किलोग्राम वर्मी कम्पोस्ट प्रति वर्ग मीटर की दर से प्रयोग

2-4 केंचुए प्रति गमला छोड़ दें, तो भी बिना खाद का प्रयोग किए ही गमले में अच्छे पौधे तैयार किए जा सकते हैं। **वर्मी कम्पोस्ट से लाभ :**

* वर्मी कम्पोस्ट को प्रयोग किया जाता है, उस क्षेत्र के नीचे का पानी हानिकारक रसायनों से मुक्त हो जाता है।

* यह एक अच्छा व्यवसाय है।

भारत में संतरा मुख्य रूप से महाराष्ट्र के नागपुर यवतमाल वर्धा बुलडाना एवं विदर्भ को लगते छिन्दवाड़ा जिले के पांदुरना सौसर तहसील में संतरे की फसल ली जाती है एवं देश में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान में भी संतरे का उत्पादन लिया जाता है।

संतरे की प्रजातियाँ : मुख्य रूप से हमारे देश में नागपुरी संतरा तथा किन्नों जाती के संतरे की फसल ली जाती है।

नागपुरी संतरा : इसका आकार गोल चमकदार पकने पर नारंगी एवं भरपुर रसदार होता है।

परिपक्व संतरे का व्यास 6 सेटीमीटर से 8 सेटीमीटर तक होता है संतरा छिलने के बाद एक विशेष प्रकार की सुगंध आती है। इसी गुण के कारण संतरा देश में ही नहीं विदेशों में भी प्रसिद्ध है।

किन्नों संतरा : मुख्य रूप से पंजाब हरियाणा राज्य में इसकी फसल ली जाती है। फल का वजन 225 ग्राम तक होता है।

फल का रंग आर्कषक एवं स्वाद में नागपुरी संतरे से खट्टा होता है, इसकी छाल मोटी होने दुर के मार्किट में भेजने के लिए उत्तम होता है।

खेत की तैयारी : पौधे लगाने के लिए गहरी काली मिट्टी या रेत मिश्रित वालुकामय खेत संतरे के लिए अच्छा होता है।

पौधे लगाने के लिए ग्रिष्म काल में एक माह पहले भारी जमीन पर 18x18, हल्की जमीन पर 15x15 फीट पर मार्क करके 1.5x1.5x1.5 इंच के गड्ढे खोद कर उसे एक माह तक वैसे ही छोड़ दें जिससे धूप में हानिकारक किट मर जाए। उसके पश्चात् 40 किलो सड़ी गोबर की खाद या उपजाऊ मिट्टी 7 किलो नीम की सड़ी खाद 1 किलो सुपर फास्फेट एवं 50 ग्राम कीटनाशक पाउडर के मिश्रन से गड्ढे भर देते हैं। पौधे लगाने समय जमीन से 3 इंच पौधे की अंगू रहे इस बात का ध्यान रखे हमारे देश में पौधे जुन से दिसम्बर तक लगाए जाते हैं।

सिंचाई निर्दार्श गुड़ाइ : पौधे लगाने के बाद पौधे को पानी देना चाहिए। एक माह तक आवश्यक है।



चाहिए। खेत में बरसात का पानी संचय न हो इसका ध्यान रखना चाहिए।

पौधे को आकार देना : पौधे को प्रारंभिक अवस्था में उचित आकार देने के लिए उसकी कटिंग करना आवश्यक है। जमीन से 1.5 फिट से 3-4 टहनियाँ रखनी चाहिए। नीचे कि कांटे वाली टहनियाँ हमेशा निकालते रहना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक : अच्छी फसल लेने के लिए बगीचों को समय पर खाद एवं उर्वरक देना चाहिए जिसमें गोबर की खाद प्रति एकड़ 40 किलो तक देना चाहिए। साथ में नीम की खली 3 से 5 किलो तक देना चाहिए एवं 600 ग्राम नाइट्रोजेन एवं 400 ग्राम फास्फेट 400 ग्राम पोटाश वर्ष में इसे 3 बार देना चाहिए एवं सुक्ष्म पोषक तत्व 250 ग्राम तक देकर चाहिए। संतरे में ताजे गोबर को 200 लीटर के ड्रम 60 किलो का गोबर 500 ग्राम

लिए सबसे अच्छी विधि टपक सिंचाई है। हमारे क्षेत्र में अधिकांश बगीचे टपक सिंचाई से सिंचित होते हैं। एक वर्ष से बढ़े पौधे को ठंड के मौसम में 15 दिन में एवं ग्रीष्मकाल में 5 से 8 दिन में सिंचाई करना

रायजेबियम 500 ग्राम 1 किलो है एवं उस पर फूल आने लगते हैं। ट्राईकोडर्मा 2 किलो गुड़ एवं 2 किलो सोयाबीन, चना, उड्ड, ज्वार का आटा 4 दिन सड़ने के बाद सिंचाई के बक्त देने से अच्छे नतीजे दिखते हैं। यह वर्ष में 2 से 3 बार दिखते हैं।

प्रमुख कीट एवं रोग लक्षण
तथा उपाय: संतरे पर सफेद मक्खी, माहु, सिटस सिल्ल, लिफ माइनर, फल माईट्स तने का कीड़ा, निमेटोडस, कैंकर फाइटोथोरा, डायबैक, गोमोसीस एवं सफेद मक्खी। यह हल्के पीले रंग की होती है एवं पत्तों का रस चुसती है।

काली मक्खी : यह पत्तों का रस चुसती है एवं समय पर नियंत्रण नहीं किया तो पौधे कि सभी टहनियाँ काली हो जाती हैं। हमारे देश में इसे कोलसी कहते हैं।

सिटस सिल्ला : वह नई कोमल पत्तों का रस चुसती है एवं एक एकड़ में देना चाहिए। वर्ष में 2 बार बोर्डा पेस्ट लगाना चाहिए या 20 ग्राम कॉपर आवसीफलोराईड के साथ 30 नुवान 10 लीटर पानी मिला कर तने पर छिड़काव करना चाहिए जिससे कीड़े नहीं लगते।

लिंफ माइनर : यह छोटा किट होता है जो पत्तियों में सुरंग बनाकर रहता है।

उपचार: उपरोक्त कीटों का समय पर नियंत्रण करना जरूरी है।

बहार पकड़ना : संतरे को 3 बहार मुख्य रूप से आती है। जुलाई से अगस्त 'मृग', सितंबर से अक्टूबर 'हस्त' एवं फरवरी से मार्च 'अंबियाँ'। हमारे देश में मृग में जिनके पास सिंचाई की व्यवस्था है वह अंबियो बहार लेत है। बहार लेने के लिए पौधे 5 से 7 वर्ष में उत्पादन लेने लायक हो जाते हैं। बहार लेने के लिए पौधे को 1 से 1.5 माह तक आराम की जरूरत होती है। आराम का मतलब कौन से मौसम में फसल लेनी है, उस हिसाब से पौधे को 1 से 1.5 माह पहले पानी देना बंद कर देते हैं। जिससे पौधे में फसल देने वाली ठहनियों में अन्न का संचय हो जाता

फल कीड़ा : यह पके फलों में सुंड से छेद करते हैं जिससे फल पीले होकर गिर जाते हैं जिससे नुकसान होता है।

उपचार : डायक्लोरोवास या नुवान 30 मिलीलीटर पानी के समय छिड़काव करना चाहिए एवं खेतों में धुवा करना चाहिए बाजार में फल मक्खी के लिए ट्राप आते हैं वह लगाने चाहिए बगीचा खरपतवार

मुक्त रखना चाहिए।

डायबैक : शुरूआत में पौधे के पत्ते पिले पड़ जाते हैं एवं टहनियाँ ऊपर से सुखती हैं। समय पर उपचार नहीं किया तो पौधा पुरा सुख जाता है।

उपचार : पौधे की सुखी टहनियाँ काट लेनी चाहिए एवं कापर आकर्बन्डाजीम 20 ग्राम कार्बोनेट और पौधे के जड़ें खुली करके उपरोक्त दवाई पानी में मिलाकर डालनी चाहिए।

गमोसिस : यह तने में जख्म, अन्द्रव की कमतरता जिवाणु विषाणु से यह रोग होता है जिससे तना फट जाता है। एवं एक चिपचिपा द्रव रिस्ता है। जिससे पौधों कमज़ोर होता है।

उपचार : पौधे तने में जख्म से द्रव का रिसाव देखते ही साफ करके एरंडी के तेल में रेडोमील या मलहम लगाने से रिसाव बंद हो जाता है पौधे को वर्ष में 2 बार बोर्डा पेस्ट लगाना चाहिए।

कैंकर : भयानक रोग का प्रकोप फल एवं पत्तियों में दिखाई देता है। शुरूआत में पत्तों के निचले भाग में लक्षण प्रगट होते हैं जिससे पीले भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं जिससे पत्तियाँ पीली पड़ कर गिर जाती हैं। फल धब्बे खुरदरे भूरे रंग के छिलके की गहराई तक होते हैं। जिससे छिलके फट जाते हैं।

उपचार : बरसात में कार्बन्डाजीम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए एवं बबब 3 ग्राम स्ट्रोसाइक्सीन 1 ग्राम 10 लीटर पानी में घोल बनाकर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए।

फलों को तोड़ना : संतरे से 6 से 8 माह में पके हो जाते हैं। प्रति पौधा अच्छी तरह बगीचे की देखभाल कि जाए तो 250 से 1500 फल प्रति पौधा उत्पादन मिलता है।

संतरा पौधे की उपलब्धता : संतरे के पौधे हमारे क्षेत्र में जून से सितंबर तक उपलब्ध रहते हैं। संतरे पौधे की मंडी के रूप में महाराष्ट्र में शेंदुरदाना घाट तहसील वरूड जिला अमरावती से हर वर्ष दूसरे प्रदेशों में लाखों पौधे किसान ले जाते हैं या हमसे संपर्क करने पर उत्तम दर्जे के पौधे उपलब्ध करवाने में हम मदद कर सकते हैं।

बकरी देती है 7 किलो दूध, बकरा 3 लाख रुपए में बिका

रनियाँ का किसान बकरे बेचकर करता है 8-9 लाख की कमाई

मोगा जिले के रनियाँ गांव के किसान अमनदीप सिंह ने गिल प्रति वर्ष 8 से 9 लाख रुपए की कमाई बकरे बेचकर करते हैं। वर्तमान में उनके पास बीटल नस्ल की 60 नर-मादा बकरियाँ हैं। इनमें परी नाम की एक बकरी है, जो रोजाना 7 किलो दूध देती है। इसको गत वर्ष चड़िक मेल में पहला स्थान मिल चुका है। इसी नस्ल का एक बकरा तीन साल पहले बकरीद पर्व पर 3 लाख रुपए में बिक चुका है।

अमनदीप सिंह ने बताया कि बकरा पालन-पोषण के साथ अमनदीप सिंह ने इस पेशे को अपनाया था। इसमें लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। उन्होंने आज तक कोई भी बकरी नहीं बेची है। बकरियाँ औसतन डेढ़ साल में दो बार बच्चे देती हैं। बीटल नस्ल की बकरियाँ 1 से 3 बच्चों को जन्म

महंगे दाम पर बेचते हैं, क्योंकि इस नस्ल के बकरों का रंग-रूप अपेक्षाकृत दूसरी उनके बकरों से ज्यादा आकर्षक होता है। उनके पास कई बकरे 50 इंच ऊंचे हैं। वैसे तो उनके पास 80 एकड़ ज़मीन है, परन्तु जितनी आमदानी वह बकरों के कारोबार से करते हैं, उन्हीं शायद उन्हें दूसरे व्यवसाय से नहीं होती है।

12 साल पहले नर-मादा 6 बकरियों के पालन-पोषण के साथ अमनदीप सिंह ने इस पेशे को अपनाया था। इसमें लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। उन्होंने आज तक कोई भी बकरी नहीं बेची है। बकरियाँ औसतन डेढ़ साल में दो बार बच्चे देती हैं। बीटल नस्ल की बकरियाँ 1 से 3 बच्चों को जन्म

देती हैं। वह राज्य के सभी छोटे-बड़े किसान भाईयों से अपील करते हैं कि परम्परागत खेती के अलावा वह इससे जुड़ कर व्यवसाय करें, जिससे उनकी आमदान काफी बढ़ जाएगी। जो भी किसान मदद के लिए उनके पास आता है, उसे वह एक-दो बकरी उसकी जरूरत के अनुरूप दे देते हैं, ताकि उसका काम बढ़ सकें।

उन्होंने बताया कि वह प्रायः बकरियों का दूध नहीं बेचते हैं। जब कभी जरूरत होती है, तो दूध 80 रुपए लीटर के हिसाब से बिकता है। वह अपनी बकरियों का दूध उनके बच्चों को ही पिलाते हैं, जिससे वे सेहतमंद होने के साथ ही जल्दी तैयार भी हो जाते हैं।

हो जाते हैं। वह बकरियों के दाने में चारा, घर के खाने व सब्ज

मोटा अनाज ज्वार के औषधीय गुण

सरोज रानी, यूनिवर्सिटी बायोटैक्नोलॉजी संस्थान,

चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, मोहाली-140413

ललिता व विशाल गांधी, सहायक वैज्ञानिक, चावल अनुसंधान संस्थान (वौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय), कौल-136021

* ज्वार में फाइबर की उच्च मात्रा शरीर में एल.डी.एल. कोलेस्ट्रॉल या खराब कोलेस्ट्रॉल को दूर करने में मदद करती है। यह शरीर को कई हृदयाधात्र जैसे दिल के दौरे, स्ट्रोक और धमनीकला काठिन्य से बचा सकता है।

* ज्वार के दानों में एक चोकर की परत होती है, जिसमें दुर्लभ एंटीऑक्सीडेंट होते हैं, जो शर्वत अनाज कैसर (एसोफैगन कैसर) को रोकने में मदद कर सकता है।

* ज्वार में उच्च आहार फाइबर पाचन तंत्र को भोजन की गति को पूरी तरह से सुचारू रखने में मदद करता है। यह सूजन, ऐन, अतिरिक्त गैस, कब्ज, दस्त और सामान्य पेट में दर्द को रोकता है।

* जिन लोगों को ग्लूटेन से एलर्जी है, उनके आहार में गेहूं के

लिए ज्वार के दाने अद्भुत विकल्प बनाते हैं। इस एलर्जी से सीलिएक रोग हो सकता है, जो एक ऑटो-प्रतिरक्षा रोग है। यह सूजन, मतली और गंभीर आंतों की क्षति से शरीर को राहत देता है, जो लस एलर्जी के मामलों में पैदा कर सकता है।

* ज्वार में कैल्शियम और मैग्नीशियम के स्त्रोत पाए जाते हैं, जो शरीर में शर्करा और स्टार्च के अवशोषण को कम करता है। यह शरीर में ग्लूकोज और इंसुलिन के स्तर को नियंत्रित करके मधुमेह जैसी बीमारियों को रोकने में मदद करता है।

* जिन लोगों को ग्लूटेन से एलर्जी है, उनके आहार में गेहूं के

मैग्नीशियम तत्व आपके शरीर में कैल्शियम के स्तर को नियंत्रित और बनाए रखता है।

* नियासिन (विटामिन बी3) भोजन को शरीर द्वारा प्रयोग करने योग्य ऊर्जा के रूप में परिवर्तित करने का एक अभिन्न अंग है। यदि शरीर टूट जाता है और पोषक तत्वों को ऊर्जा में परिवर्तित कर देता है, तो यह शरीर में अचानक स्पाइक्स और फॉल्स के बजाये पूरे शरीर में पूरे दिन ऊर्जा के स्तर का स्थिर रखता है।

* ज्वार में तांबा और लोहा दो मुख्य खनिज हैं। शरीर में रक्त परिसंचरण को बेहतर बनाने के लिए तांबा और लोहा एक साथ काम करते हैं। तांबा शरीर में लोहे के अवशोषण को बढ़ाता है, लाल रक्त कोशिकाओं के विकास को बढ़ाता है, सेलुलर विकास और मुरम्पत को उत्तेजित करता है और एनोमिया की संभावना को भी कम करता है।

* ज्वार के दाने की चोकर परत में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट कैसर की रोकथाम के इलाज में मदद करते हैं। ज्वार का प्रभाव त्वचा पर कोशिकाओं वाले वर्णक के विकास को रोक कर मेलेनोमा को रोकने में भी प्रभावी है। □

के कारण इसमें मैलिक हाईड्रोजाइड (एम.एच.) अम्ल का उपयोग प्रसुप्त अवस्था पैदा करने के लिए किया जाता है। इसमें लगभग 20-30 दिनों तक पानी मिलने पर भी फलियां अंकुरित नहीं होती हैं। सिंचाई करके शुष्क खेत से भी मूँगफली की खुदाई की जा सकती है। इसका व्यावसायिक स्तर पर कम उपयोग होता है।

भंडारण : भंडारण में पूर्व पके हुए दानों में नमी की मात्रा 8-10 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए। अन्यथा अधिक नमी होने पर मूँगफली में पीली फक्कूद (एस्परजीलस फ्लेवस) द्वारा एफलॉटाक्सिन नामक विषेला तत्व पैदा हो जाता है। यह मानव व पशु आदि के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। यदि मूँगफली को तेज धूप में सुखाया जाता है तो अंकुरण क्षमता का हास होता है। इसलिए अंकुरण क्षमता को बनाए रखने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :

* उपयुक्त नमी होने पर ही मूँगफली को जमीन से निकालें ताकि मूँगफली भूमि में ना रहे।

* मूँगफली को भूमि से निकालने के बाद इसके पौधों को उल्टा करके, छोटे-छोटे गट्ठा बनाकर छायादार स्थान में सुखाना चाहिए।

* जब मूँगफली सूख जाए तो उसको पौधों से अलग कर उनको 8-10 प्रतिशत नमी रहने तक और सुखाना चाहिए।

* पूर्णतया सूखी फलियों को हवादार क्षेत्र में भंडारित करना चाहए। जहां पर नमी ग्रहण नहीं कर सके या फिर प्रत्येक बोरे में कैल्शियम क्लोराइड 300 ग्राम प्रति 40 कि.ग्रा. बीज की दर से डालकर भंडारण करें।

* भंडारण के समय हानि पहुंचाने वाले कीट-पतंगों से सुरक्षा रखें, जिससे भंडारण के समय फलियां खराब न हों। □

जायद में मूँगफली उत्पादन

का 0.5-1.00 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव कर तुरंत भूमि में मिला देना चाहिए।

*** अंकुरण से पहले :-** एलाकलोर 50 ई.सी. या 10 प्रतिशत जी (दानेदार) का 1-1.5 कि.ग्रा. नाईट्रोजन का 0.25-0.75 कि.ग्रा., पेंडिमेथालिन 30 प्रतिशत ई.सी. या 5 प्रतिशत जी (दानेदार) का 1-1.25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि उपचारित करें।

*** अंकुरण के बाद :-** इमेजेथापिर 10 प्रतिशत एस.एल. 0.1-0.2 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से लगभग 5-25 दिनों के दौरान एक बार छिड़काव कर भूमि उपचारित करना चाहिए।

मूँगफली की खुदाई :-

जब पौधों की पत्तियों का रंग पीला पड़ने लगे एवं फलियों के अंदर का टैनिन का रंग उड़ जाए तो खेत में हल्की सिंचाई कर खुदाई कर लें एवं पौधों से फलियों को अलग कर लें।

मूँगफली का क्षेत्र

भारत, मूँगफली उत्पादन एवं क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व में प्रथम स्थान पर है। देश में इसके कुल उत्पादन का 81 प्रतिशत भाग तेल निकालने में, 12 प्रतिशत बीज के रूप में, 6 प्रतिशत खाद्य के रूप में एवं शेष 01 प्रतिशत नियात में उपयोग किया जा रहा है। मूँगफली नियात करने वाले देशों में भी भारत अग्रणी देश है। इसके कुल उत्पादन एवं क्षेत्रफल का लगभग 91 प्रतिशत भाग केवल गुजरात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं पंजाब आदि राज्यों में बिखरे हुए हैं। इसके कुल क्षेत्रफल के लगभग 87.7 प्रतिशत भाग पर खरीफ मौसम में एवं शेष भाग पर जायद मौसम में मूँगफली उगाई जाती है। मूँगफली उत्पादन में मध्य प्रदेश



को उपचारित करने के लिए 2-5 लीटर पानी में 300 ग्राम गुड़ डालकर और उसे गर्म करके एक घोल तैयार कर लें। फिर घोल को टंडा करके उसमें 600 ग्राम राईजोबियम जीवाणु मिलाएं। यह घोल एक हैक्टेयर में बुवाई करने वाले बीज के लिए पर्याप्त होता है। इस घोल की बीजों पर समान परत हाथों द्वारा धीरे-धीरे मिलाकर चढ़ानी चाहिए। इसके बाद फॉस्फेट विलेय जीवाणु कल्चर से उपचारित करते हैं। उपचारित बीजों को छायादार स्थान में सुखाकर शीघ्र बुवाई के लिए प्रयोग करें। ऐसा करने से

नाइट्रोजन उर्वरकों का प्रयोग फसल की बुवाई के समय ही करना चाहिए तथा बुवाई के समय पूरी मात्रा का प्रयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि नाइट्रोजन उर्वरक बहुत धुलनशील होते हैं तथा लीचिंग द्वारा नष्ट हो जाते हैं। नाइट्रोजन उर्वरक के उपयुक्त रूप को लागू करने से लीचिंग कम हो सकती है।

कृषि भारत की लगभग 50 प्रतिशत मानव आबादी के लिए आजीविका का स्रोत है। यह दुनिया की सबसे बड़ी मानव आबादी का घर है। लगभग 309 मिलियन टन खाद्यान्न के वर्तमान स्तर के साथ उत्पादन (गेहूं और चावल प्रमुख है), देश द्वारा 400 मिलियन टन से अधिक खाद्यान्न का उत्पादन करना है 2050 में 1.68 अरब लोगों को खाना खिलाना है। लगातार सघन होती खेती एवं खाद्यों के असंतुलित प्रयोग से भूमि में जैविक पदार्थ तथा आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा में निरंतर कमी हो रही है।

पौधों में व्यवहारिक रूप से सभी (92) प्राकृतिक तत्व होते हैं, लेकिन 17 तत्व आवश्यक पोषक तत्व होते हैं, जो पौधे के विकास के लिए आवश्यक होते हैं। ये पोषक तत्व या तो मिट्टी द्वारा या पौधे और पशु खाद्य या अन्य जैविक स्रोतों या खनिज उर्वरकों द्वारा प्रदान किए जाते हैं। इनमें से तीन, कार्बन (सी), हाइड्रोजन (एच) और ऑक्सीजन (ओ) सबसे बड़ी मात्रा में उपयोग किए जाते हैं और हवा व पानी द्वारा प्रदान किए जाते हैं।

अर्नन और स्टाडट (1939) द्वारा किसी तत्व की अनिवार्यता नहीं है, लेकिन प्राथमिक पोषक तत्वों की तुलना में कुछ कम मात्रा में आवश्यक है। कम मात्रा में पौधों द्वारा आवश्यक आठ आवश्यक तत्व होते हैं, जो पौधे के विकास के लिए आवश्यक होते हैं। ये पोषक तत्व या तो मिट्टी द्वारा या पौधे और पशु खाद्य या अन्य जैविक स्रोतों या खनिज उर्वरकों द्वारा प्रदान किए जाते हैं। इनमें से तीन, कार्बन (सी), हाइड्रोजन (एच) और ऑक्सीजन (ओ) सबसे बड़ी मात्रा में उपयोग किए जाते हैं और हवा व पानी द्वारा प्रदान किए जाते हैं।

प्रोजैक्ट में 7 लोगों को रोज़गार, एम.बी.ए. बेटा करता है मदद 12 एकड़ के गने से गुड़ का कारोबार, डिमांड भरपूर

आज का नौजवान अपने खेत बेच कर लाखों रुपये खर्च कर विदेशों का रुख कर रहा है, लेकिन थोड़ी ज़मीन का मालिक भी अगर अच्छा काम करे, तो वह अच्छा जीवन व्यतीत कर सकता है। गुरादासपुर के अलीशेर गांव का किसान रजवंत सिंह पिछले 14 सालों से गुड़ का कारोबार कर रहा है। वह पांच एकड़ में गने की बुवाई का गुड़ बनाता था। लेकिन उसके गुड़ की मांग इतनी बढ़ गई कि अब उसे और खेत ठेके पर लेकर गने और गुड़ का बनाना बढ़ रहा है। अब उसने बाहर से भी गना खरीदना शुरू कर दिया है। उसने अपने प्रोजैक्ट में 7 लोगों को रोज़गार दे रखा है।

रजवंत सिंह के अनुसार, अगर गुड़ की क्वालिटी अच्छी हो तो उसे बेचने में कोई दिक्कत नहीं आती। इस समय उसने 6 एकड़ में गना लगाया हुआ है। इतने एकड़ का गना भी बाहर से मंगवाकर गुड़ तैयार कर रहा है। गुड़ बनाने का काम पहली नवंबर से शुरू होकर अप्रैल में खत्म हो जाता है। यह काम सिर्फ छह महीने चलता है। गने की कटाई के बाद वह अपने खेतों में गेहूं की बुवाई कर देता है। गेहूं की कटाई के बाद फिर गने लगा देता है। उसने बताया कि इस काम में उसका एम.बी.ए. पास बेटा सहायता करता है। उसने छोटे किसानों को सलाह दी कि किसानों के साथ-साथ सहायक धंधा अपना लें, ताकि वे अच्छी कमाई कर सकते हैं।

संतुलित उर्वरक प्रयोग

डॉ. नेहा चौहान, डॉ. शिवानी ठाकुर, डॉ. शकुंतला राही, डॉ. एल.के. शर्मा, कृषि विज्ञान केन्द्र, मंडी, चौ. सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर (हिमाचल प्रदेश)

अन्य 14 पोषक तत्व खनिज तत्व हैं, जो पौधों की जड़ों से मिट्टी से प्राप्त होते हैं।

तीन प्रमुख पोषक तत्व नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाशियम की पौधों को अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में आवश्यकता होती है। सल्फर, कैल्शियम और मैग्नीशियम तीन माध्यमिक पोषक तत्व पौधों की वृद्धि के लिए प्राथमिक पोषक तत्वों की तुलना में कम आवश्यक

के लिए निम्नलिखित तीन मानदंड दिए गए हैं :

1. तत्व की अनुपस्थिति में पौधा अपना जीवन-चक्र पूरा नहीं कर सकता है।

2. तत्व का कार्य विशिष्ट होना चाहिए और कोई अन्य तत्व इसे पूर्ण रूप से प्रतिस्थापित नहीं कर सकता है।

3. तत्व सीधे पौधों के पोषण में एक मेटाबोलाइट के घटक के

खाद्यों का प्रयोग मृदा की जांच के अनुसार ही करना चाहिए।

नाइट्रोजन उर्वरकों का प्रयोग फसल की बुवाई के समय ही करना चाहिए तथा बुवाई के समय पूरी मात्रा का प्रयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि नाइट्रोजन उर्वरक बहुत धुलनशील होते हैं तथा लीचिंग द्वारा नष्ट हो जाते हैं। नाइट्रोजन उर्वरक के उपयुक्त रूप को लागू करने से लीचिंग कम हो सकती



रूप में या एक एंजाइमिक प्रतिक्रिया आदि के सहकारक के रूप में शामिल होना चाहिए।

आवश्यक पोषक तत्वों की कमी के सामान्य लक्षण : पोषक तत्वों की कमी के कारण होने वाले लक्षणों को आमतौर पर पांच श्रेणियों में बांटा जाता है :

(1) अवरुद्ध वृद्धि (2) हरित हीनता (3) शिराओं के बीच हनित हीनता (4) बैंगनी-लाल रंग और (5) परिगलन।

उर्वरक प्रयोग में सहायक सिद्धांत : फसलों में उर्वरक एवं

है। जब लीचिंग क्षमता मध्यम से उच्च हो तो नाइट्रोजन उर्वरक का उपयोग सीमित होना चाहिए। नाइट्रोजन उर्वरकों के प्रयोग का समय फसल के अधिकतम उपयोग की अवधि के जितना संभव हो, उतना निकट होना चाहिए। सतही प्रसारण उर्वरक के बजाय उपस्थित आवेदन किया जाना चाहिए।

फास्फोरस उर्वरक का प्रयोग पौधों की जड़ों के पास करना चाहिए, क्योंकि मृदा में इनका स्थिरीकरण हो जाता है। गोबर की खाद, कम्पोस्ट आदि

खाद्यों का प्रयोग फसल बुवाई से 30-45 दिन पहले प्रयोग करना चाहिए ताकि फसल बुवाई के समय यह खाद्य विच्छेदित होकर मृदा में भली-भांति मिल सकें तथा उसमें उपस्थित पोषक तत्व पौधों को प्राप्त हो सकें।

गोबर की खाद हमेशा सदी-गली अवस्था में ही खेतों में प्रयोग करनी चाहिए, ताकि उसमें दीमक आदि का प्रकोप ना हो।

उर्वरकों का संतुलित प्रयोग : खाद तथा उर्वरकों का उचित मात्रा तथा सही विधि से प्रयोग करना अत्यंत आवश्यक होता है, क्योंकि उर्वरकों का अधिक प्रयोग करने से फसलों की उपज घट जाती है तथा किसानों की लागत भी बढ़ जाती है।

पोषक तत्व प्रबंधन के लिए चार कारक - दर, स्त्रोत, समय और स्थान आवश्यक हैं। इन मिलाएं का पालन करते हुए उत्पादक उन उर्वरकों का प्रयोग कर सकते हैं, जो अत्याधिक खाद डाले बिना फसल के पोषण को अधिकतम करते हैं।

सही स्त्रोत : फसल-उपलब्ध रूपों में उर्वरक प्रदान करना, जो मिट्टी की स्थिति के लिए उपयुक्त हों और विशेष फसल के लिए पोषक तत्वों का सही संतुलन हो।

सही दर : मिट्टी में पहले से मौजूद पोषक तत्वों और लागू किए जा रहे अन्य संशोधनों में पोषक तत्वों को ध्यान में रखते हुए, फसल की पोषक मांग के अनुरूप मात्रा में उर्वरक लगाना।

सही समय : पौधों को ज़रूरत पड़ने पर उर्वरक की आपूर्ति करना।

सही जगह : ऐसे स्थान पर उर्वरक प्रदान करना, जहां पौधों की जड़ें पोषक तत्वों तक पहुंच सकें और खेतों में मिट्टी पोषक तत्वों की उपलब्धता में स्थानिक भिन्नता पर विचार करें। ये सभी कारक स्थानीय पर्यावरण और मिट्टी की स्थिति पर भी निर्भर हैं। इन अंतः क्रियाओं के कारण, जो 'सही' है, वह खेत और फसल के प्रकार के अनुसार अलग-अलग होगा।

हामझेड़ी के दो किसान खेतों में नहीं जलाते फसल अवशेष

इंद्रजीत-कृष्ण चंद बरसों से कर रहे सीधी बुवाई

हामझेड़ी विभाग के दो किसान इंद्रजीत सिंह और कृष्ण चंद 8 सालों से धान के अवशेषों को आग न लगा कर गेहूं की सीधी बुवाई कर अपने आस-पास के गांवों के दूसरे किसानों में अलख जगाने का काम कर रहे हैं। वह पर्यावरण संरक्षण कर रहे हैं। उनके प्रयासों को देखते हुए सूबे के राज्यपाल, खेतीबाड़ी विभाग और पटियाला ज़िला प्रशासन उन्हें सम्मानित कर रहे हैं।

इंद्रजीत सिंह के अनुसार, वह बरसों से सीधी बुवाई कर रहे हैं, जिसमें वह सुपर सीडर, हैप्पी सीडर और जीरो ड्रिल का उपयोग करते हैं। सीधी बुवाई से फसल का ज्ञाह ज्याद़ ज्यादा निकलता है। अब उनके गांवों के अन्य किसान भी बुवाई करने लगे हैं। वह

की आमद बढ़ती है। सीधी बुवाई से फसल पर सुंडी के हमले की आशंका ज़रूर रहती है, लेकिन दवा का छिड़काव कर इसको खत्म किया जा सकता है। दोनों किसान बताते हैं कि उनके प्रयासों से पिछले 2 सालों में 15 से अधिक किसानों ने अपने खेतों में आग नहीं लगा कर सीधी बुवाई करते हैं। भले ही सीधी बुवाई करने में खर्च ज्यादा आता है, परन्तु इससे ज़मीन की उपजाऊ शक्ति और फसल की अपनाया है।

कई किसान भी तैयार मशीनरी समय पर मिले

इन दोनों किसानों के प्रयासों का इनके अपने गांव में कैसा असर है? इस संबंधी गांव के अन्य किसानों ने अपने विचार दिए। सुरजीत सिंह ने कहा कि वह इन दोनों किसानों को 8 साल से देख रहे हैं। सरकार इनके घरों में आकर इनका सम्मान कर रही है। इनका प्रयास अच्छा है। सरकार अगर समय पर मशीनरी देने का भी प्रबंध करे तो वह और उनके अन्य साथी पराली को आग न लगाने को तैयार है। दूसरे किसान हरविंदर सिंह ने सुझाव दिया कि सरकार को जागरूकता अभियान चलाना चाहिए।

बिन ईंधन कैसे चलेगा कृषि का इंजन

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा इस वर्ष का बजट पेश करते हुए कृषि को अर्थव्यवस्था का पहला इंजन बताने से किसानों की उम्मीद जगी। इस वर्ष के आर्थिक सर्वेक्षण में अर्थव्यवस्था के बाकी क्षेत्रों के मुकाबले कृषि क्षेत्र में न्यादा तेज वृद्धि की उम्मीद जताई गई है। कोरोना महामारी के बाद से पहले की तुलना में देश में खेतीबाड़ी पर निर्भर आबादी बढ़ गई है। लेकिन बजट के आंकड़े देखने के बाद ऐसा लगा, मानो सरकार इस इंजन से उम्मीद करती है कि वह बिना ईंधन के अपने दम पर चलेगा।

किसानों की चार मुख्य उम्मीदें नवम्बर में पेश संसदीय समिति की रिपोर्ट में दर्ज की गई थीं। पहली, किसान को फसल का वाजिब दाम दिलवाने के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की कानूनी गारंटी दी जाए। दूसरी, किसान पर बढ़ते कर्ज से उसे मुक्ति दिलाने की कोई योजना बनाई जाए। तीसरी, सालाना 6,000 रुपए की किसान सम्मान निधि में महंगाई के मुताबिक बढ़ोत्तरी की जाए। चौथी, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का विस्तार किया जाए।

अफसोस कि वित्त मंत्री ने इस बजट में किसानों की इन चारों उम्मीदों पर पानी फेर दिया। बजट भाषण में कानूनी गारंटी तो छोड़ दीजिए, एम.एस.पी. का जिक्र भी नहीं था। वित्त मंत्री ने सिर्फ तीन दालों - अग्रहर, मसूर और उड़द की सरकारी खरीद का वादा किया और वह भी किसान को सही दाम दिलवाने के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि इन फसलों को विदेश से आयात करना पड़ता है। फसल खरीदी की योजना 'आशा' का बजट जस का तस है। बाकी फसलों की खरीद या किसानों को सही दाम की कोई चिंता ही नहीं दिखाई दी, जबकि इस साल अच्छे मौनसून के चलते पैदावार ज्यादा होने की आशा और दाम गिरने की आशंका है।

सरकार के अनुसार देश के हर किसान परिवार के सिर पर कोई 92,000 रुपए से अधिक का कर्ज है। कम्पनियों के लिए नित नई योजना लाकर पिछले 10 सालों में कोई 14 लाख करोड़ रुपए की कर्ज माफी

करने वाली सरकार ने किसानों को कर्ज मुक्त करने की कोई भी चिंता नहीं दिखाई। हाँ, किसान क्रैडिट कार्ड पर लोन की सीमा को 3 लाख रुपए से बढ़ा कर 5 लाख रुपए कर दिया गया। लेकिन इस घोषणा के पीछे भी ईमानदारी नहीं दिखी, क्योंकि कृषि ऋण के लिए बजट में तय की गई अनुदान की कुल मद ज्यों की त्यों रही है।

तमाम चर्चा के बावजूद 6 वर्ष पहले किसान के लिए निर्धारित वार्षिक किसान सम्मान निधि में इस साल भी कोई वृद्धि नहीं की गई। इस बीच खेती की लागत और किसान का घर खर्च कोई डेढ़ गुना बढ़ चुका है और अब उस 6,000 रुपए की वास्तविक कीमत कोई 4,000 रुपए के बराबर रह गई है। लगता है सरकार इनमें सामान्य वृद्धि के लिए भी किसी चुनाव का इंतजार कर रही है। रही बात फसल बीमा की, तो वित्त मंत्री ने इसका विस्तार करने की बजाय प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना पर सरकारी खर्च पिछले साल हुए 15,864 करोड़ रुपए से घटा कर 12,242 करोड़ रुपए कर दिया है।

खेती-किसानी के प्रति इस बेरुखी का कुल नतीजा यह है कि इस इंजन में ईंधन हर साल कम होता जा रहा है। वर्ष 2019 के बजट में किसान सम्मान निधि



योगेन्द्र यादव

की राशि 86,000 करोड़ रुपए पर जस की तस है। इसलिए नहीं कि इस योजना की मांग रुक गई है, बल्कि इसलिए कि हर साल केन्द्र सरकार वित्तीय वर्ष के अंतिम महीनों में राज्य सरकारों को इस योजना का पैसा भेजना बंद कर देती है, ताकि पैसे के अभाव में थक कर राज्य सरकारों स्थानीय स्तर पर काम रोक दें। मनरेगा योजना का गला घोटने की यह साजिश इस साल भी जारी रही।

हर साल की तरह इस साल भी वित्त मंत्री ने कृषि के लिए नई परियोजनाओं की घोषणा की। इनमें से प्रमुख थी प्रधानमंत्री धन धान्य कृषि योजना। उद्देश्य है कृषि के



लिहाज से सबसे पिछड़े 100 ज़िलों में कृषि को मजबूत करना। दावा है कि इससे 1.7 करोड़ किसानों को लाभ पुंचेगा। लेकिन बजट में इसके लिए फिलहाल एक पैसा भी निर्धारित नहीं किया गया है। दलहन, कपास तथा फल-सब्जी की खेती सुधारने के लिए कई राष्ट्रीय मशीनों की घोषणा हुई, लेकिन इनके लिए निर्धारित राशि इतनी कम है, उससे कुछ भी प्रभावी होने की उम्मीद नहीं की जा सकती। मखाना बोर्ड के नाम पर सिर्फ 100 करोड़ रुपए दिए गए हैं।

साल-दर-साल का अनुभव यही बताता है कि ऐसी घोषणाएं अक्सर कागज पर रह जाती हैं। पांच साल पहले बजट में बड़े गाजे-बाजे के साथ यह ऐलान हुआ था कि आने वाले 5 साल में सरकार एग्रीइंफ्रा फंड के तहत कृषि में 1 लाख करोड़ रुपए का निवेश करेगी। अब 5 साल पूरे होने के बाद अब तक सिर्फ 37,000 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है, खर्च होना तो बाद की बात है। वित्त मंत्री ने इस बार इसका जिक्र नहीं किया, जैसे किसान की आय दोगुनी करने के बादे पर सरकार अब चुप रहती है।

पिछले वर्ष बजट में सब्जी उत्पादन और बिक्री की सप्लाई चेन बनाने और सहकारिता की नई राष्ट्रीय नीति बनाने की घोषणा हुई थी, जिनका अभी तक कोई नामो-निशान तक नहीं है। देश के ज़मीन के रिकॉर्ड का कंप्यूटरीकरण करने का दावा हुआ था, जिसमें अब तक सिर्फ 9 प्रतिशत काम हुआ है। देश में 15,000 ड्रॉन दीदी का वादा था, अब तक यह आंकड़ा 1,000 भी नहीं छू पाया है।

पिछले अनुभव और इस बजट से हुई निराशा के चलते इसमें कोई हैरानी नहीं कि किसान नेताओं ने इस बजट को 'ढाक के तीन पात' करार दिया है।

कृषि एवं कृषि संबंधित विषयों पर आधुनिक जानकारी लेने हेतु पढ़ें

कृषि संसार

साप्ताहिक कृषि समाचार पत्र

किसान भाईयों व डीलर/डिस्ट्रीब्यूटरों के लिए

चंदों में विशेष छूट

एक वर्ष 500/- रुपए दो वर्ष 800/- रुपए

कृषि संसार (कृषि साप्ताहिक)

के.डी. कॉम्प्लैक्स, गजशाला रोड, पटियाला

KHETI DUNIYAN
TID - 62763351



चंदे भेजने हेतु QR कोड स्कैन करें।

पेमेंट करने के पश्चात् अपना डाक पता इस नंबर पर भेजें :

90410-14575